Define primary group and distinguish between primary and secondary group.

or Define primary group. Distinguish it from secondary group.

प्राथमिक समूह की परिभाषा दें। द्वितीयक समूह से इसका अन्तर स्पष्ट करें।

Ans हम अपनी सामाजिक दिनचर्या में प्रायः दो प्रकार के व्यक्तियों से मिलते हैं। एक तो ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनसे हम प्रायः रोज ही मिलते हैं, उनके साथ मिलने में एक विशेष प्रकार का अपनापन अनुभव करते हैं और ऐसे व्यक्तियों से मिलने जुलने के पीछे कोई उद्देश्य या स्वार्थ नहीं होता है। सी० एच० कूले (C. H. cooley) ने इसी प्रकार के समूह को प्राथमिक (Primary) समूह कहा है।

परिभाषाएँ (Definitions) – प्राथमिक समूह अवधारणा का उपयोग सर्वप्रथम सी० एच० कूले ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सोशल आर्गनाइजेशन' में (1909 ई०) में किया। तब से आज तक यह अवधारणा चर्चा का एक विषय रही है। विभिन्न समाज शास्त्रीयों ने प्राथमिक समूह को परिभाषित किया है इसकी कुछ मुख्य परिभाषा इस प्रकार है :—

सी० एच० कूले के अनुसार प्राथमिक समूह से हमारा तात्पर्य इन समूहों से है जिनकी विशेषताएँ हैं, सदस्यों के बीच आमने सामने के घनिष्ठ सम्बन्ध एवं पारस्परिक सहयोग। यह समूह कई माने में प्राथमिक है, किन्तु प्रमुख रूप से इस अर्थ में कि ये व्यक्ति के सामाजिक स्वभाव और आदर्शों के निर्माण में मौलिक भूमिका अदा करते हैं"।

किंग्स्ले के अनुसार, "प्राथमिक समूह ऐसे लोगों का अपेक्षाकृत पुख्ता संकलन या समूह है जिनके एकता की भावना होती है और जो समान सामाजिक मूल्यों के पालन के लिये प्रतिबद्ध रहते हैं।

जिसबर्ट के अनुसार, "प्राथमिक समूह से हमारा अभिप्राय ऐसे समूहों से होता है जो विशेष रूप से सहयोगी हो तथा जिसके सदस्य एक दूसरे से पूर्ण रूप से परिचित होते हैं, किन्तु विशेष रूप से इन्हें प्राथमिक इसलिये कहा जा सकता है क्योंकि ये व्यक्ति की सामाजिक प्रवृत्तियों एवं विचारधाराओं का मौलिक निर्माण करते हैं"।

बीयरस्टेड के अनुसार "प्राथमिक समूह से कूले का अभिप्राय आत्मीय, व्यक्तिगत और आमने सामने के समूहों से है, जिनमें हम अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों एवं दैनिक जीवन के सहयोगियों को पाते हैं"।

प्राथमिक समूह और द्वितीयक समूह में अन्तर (Distinction between Primary group and Secondary group): इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्राथमिक और द्वितीयक समूह की प्रकृति व अवधारणा एक दूसरे से भिन्न है। दोनों समूह के आकार, संगठन, सम्बन्ध, उद्देश्य, व्यवहार आदि के रूप एक दूसरे से अलग हैं। विशेषताओं के आधार पर प्राथमिक एवं द्वितीयक समूह के बीच अन्तर पाया जाता है, जो निम्नलिखित है।

प्राथमिक समूह (Primary Group)	द्वितीयक समूह (Secondary Group)
(1) सदस्यों की संख्या कम होती है, अतः इसका आकार छोटा होता है।	(1) सदस्यों की संख्या अधिक होती है, अतः इसका आकार बड़ा होता है।
(2) सदस्यों के बीच शारीरिक दूरी नहीं होने के कारण उनमें आमने सामने का संबन्ध होता है।	(2) सदस्यों के बीच शारीरिक दूरी होती है, अतः उनमें आमने-सामने का सम्बन्ध नहीं होता।
(3) आमने सामने (face to face) का सम्बन्ध होने से समूह के सदस्यों में हम भावना (we-feeling) प्रबल होती है।	(3) आमने सामने (face to face) का सम्बन्ध नहीं होने से 'हम भावना we-feeling) आम तौर पर ~~प्रबल~~ प्रबल नहीं होती।
(4) सदस्यों में सम्बन्ध प्रत्यक्ष होते हैं।	(4) सदस्यों में सम्बन्ध अप्रत्यक्ष होते हैं।
(5) प्राथमिक समूह स्वतः पनपते हैं। इन्हें हम जान बूझकर स्थापित नहीं करते।	(5) द्वितीयक समूहों की स्थापना की जाती है। यह अपने आप नहीं पनपते।
(6) प्राथमिक समूह के उद्देश्य दूरगामी होते हैं।	(6) द्वितीयक समूह के उद्देश्य दूरगामी न होकर शीघ्र हासिल करने वाले होते हैं।
(7) इसके उद्देश्य निश्चित और सीमित नहीं होते। एक या दो उद्देश्यों की प्राप्ति के बाद यह भंग नहीं होता, अतः यह अधिक स्थायी होता है।	(7) उद्देश्य निश्चित होते हैं, अतः इनकी पूर्ति के बाद द्वितीयक समूह भंग हो सकता है। यह कारण है कि यह उतना स्थायी नहीं होता।

प्राथमिक समूह (Primary Group)	द्वितीयक समूह (Secondary Group)
(8) प्राथमिक समूह का अस्तित्व अत्यंत प्राचीन काल से पाया जाता है	(8) द्वितीयक समूह अपेक्षाकृत प्राचीन नहीं है। शहरीकरण एवं औद्योगीकरण के बाद ही इसकी प्रचानता समाज में बढ़ी।
(9) प्राथमिक समूह में व्यक्ति विशेष का महत्व होता है। यही कारण है कि माता-पिता की मृत्यु के बाद उनका स्थान अन्य कोई नहीं ले पाता	(9) द्वितीयक समूह में व्यक्ति विशेष का उतना महत्व नहीं होता। एक सदस्य की मृत्यु के पश्चात दूसरा सदस्य उसका स्थान ले लेता है। जैसे: ~~कानून, पुलिस आदि~~। एक आफिसर का स्थान दूसरा आफिसर लेता है।
(10) ऐसे समूहों में हमारे व्यवहार को नियंत्रित करने के लिये अनौपचारिक उपाय किये जाते हैं, जैसे: व्यंग्य, उपहास आदि	(10) द्वितीयक समूहों में सदस्यों के व्यवहारों को नियंत्रित करने के लिये औपचारिक उपाय उपयोग में लाये जाते हैं, जैसे - कानून, पुलिस आदि।
(11) व्यक्ति के समाजीकरण में प्राथमिक समूह का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। इसी के सहारे व्यक्ति के मूल व्यक्तित्व की नींव पड़ती है।	(11) समाजीकरण में द्वितीयक समूह का योगदान उतना महत्वपूर्ण नहीं होता, अतः व्यक्तित्व की प्रकृति ऐसे समूहों में निर्धारित नहीं होती।
(12) प्राथमिक समूह में समाज में रहने योग्य मूलभूत गुणों का विकास होता है। जैसे: पारस्परिक सहयोग, सहानुभूति आदि। इसी से यह कहा जाता है कि ऐसे समूहों में व्यक्ति के व्यक्तित्व की नींव पड़ती है।	(12) द्वितीयक समूहों में कुछ विशिष्ट गुणों का विकास होता है - जैसे - कार्य करने की कोई विशेष दक्षता आदि।